हिन्दी शिक्षण

→ कुल प्रश्न = 15

→ महत्वपूर्ण टॉपिक ↴

① भाषा की विशेषता
② भाषायी दक्षता
Imp ③ भाषायी कौशल
④ समस्याएं
⑤ भाषा शिक्षण के उपागम → ① शिक्षण विधियां
⑥ " " माध्यम → ① सहायक सामग्री
⑦ मूल्यांकन
⑧ भाषा शिक्षण योजनाएं
⑨ " " उद्देश्य

भाषा →

- संस्कृत भाषा की भाष धातु से बना है।
- भाषा वह साधन / माध्यम है जिसके द्वारा हम हमारी मनोदशा / विचार को व्यक्त करते हैं।
- भाषा, अभिव्यक्ति का प्रमुख साधन माना जाता है।

* प्लेटो → भाषा आत्माभिव्यक्ति का प्रमुख साधन है।
* पतंजली → भाषा ध्वन्यात्मक रूप में होठों के माध्यम से जो प्रकट होती है।
* गाँधी जी → मानसिक विकास मे मातृ भाषा का वही महत्व है जो शारीरिक विकास में माँ के दूध का होता है।

विशेषताएं ↴

- भाषा एक अर्जित योग्यता होती है। भाषा पैतृक संपदा नहीं होती है।
- भाषा जन्मजात नहीं होती है। भाषा परिवर्तनशील होती है।
- भाषा सामाजिक होती है। भाषा की अपनी भौगोलिक सीमाएं होती है।
- भाषा अर्जन के विकास में अनुकरण का विशेष महत्व है।
- भाषा सम्प्रेषण का मुख्य साधन है। भाषा मौलिक मानी जाती है।
- प्रत्येक भाषा की अपनी संरचना होती है। भाषा का अपना शिक्षाशास्त्र होता है।

हिन्दी शिक्षण की समस्याएं ⇒

- वे कारक जो शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति में बाधा उत्पन्न करते हैं।
- शिक्षण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके अपने पूर्व निर्धारित उद्देश्य होते हैं।

शिक्षण के आधारभूत कारक ⇒

① शिक्षक – शिक्षण व्यवस्था का चालक। जो सम्पूर्ण शिक्षण प्रक्रिया में नियोजनात्मक, व्यवस्थापकीय, प्रशासकीय कार्यों को करता है।

(i) शिक्षक में वक्ता व श्रोता के गुणों का अभाव पाया जाता है।
(ii) शिक्षकों में भाषायी शिक्षणशास्त्र के ज्ञान व समझ का अभाव।
(iii) कक्षा में बहुभाषिकता का साधन के रूप में उपयोग न करना।
(iv) भाषा शिक्षण के शिक्षक में भाषायी क्षमताओं का अभाव।
(v) भाषा शिक्षण के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण होना।
(vi) नवीन व आधुनिक शिक्षण प्रणालियों के प्रति क्रियाशीलता का अभाव पाया जाता है।
(vii) शिक्षक बाल विकास व प्रकृति की ओर ध्यान नहीं देते।

② शिक्षार्थी – बालक शिक्षण व्यवस्था का केन्द्र-बिन्दु माना जाता है।

(i) बालक भाषा शिक्षण के प्रति प्रायः उदासीन होता है।
(ii) भाषा शिक्षण के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण का होना।

③ पाठ्यक्रम –

(i) भाषायी पाठ्यक्रम का व्यावसायिक न होना।
(ii) परम्परागत व नीरस पाठ्यक्रम का होना।

Scanned with CamScanner

(4) अन्य कारक – (i) आवश्यक साधनों / उपकरणों का अभाव।
(ii) भाषायी समृद्ध वातावरण का अभाव पाया जाता है।

शिक्षण के कौशल ⇒

* सामान्य कौशल – सभी विषयों में समान होते हैं, शिक्षण के आधारभूत कौशल हैं।

* विशिष्ट कौशल – किसी विषय विशेष से संबंधित।

सामान्य कौशल	विशिष्ट कौशल : हिन्दी
(1) उद्देश्य निर्माण	(1) श्रवण L
(2) प्रस्तावना कौशल	(2) बोलना S
(3) प्रश्न संबंधी कौशल	(3) पढ़ना R
(4) श्यामपट्ट कौशल	(4) लिखना W
(5) उद्दीपन परिवर्तन	
(6) पुर्नबलन कौशल	

(1) उद्देश्य निर्माण संबंधी कौशल ⇒

- उद्देश्य शिक्षण प्रक्रिया के मार्गदर्शक होते हैं, जिनकी प्राप्ति के लिए ही अधिकतम प्रयास किये जाते हैं।
- ब्लूम के अनुसार उद्देश्य ↴

(1) ज्ञानात्मक	(4) कौशल
(2) अवबोध	(5) अभिरुचि
(3) ज्ञानोपयोग	(6) अभिवृत्ति

Scanned with CamScanner

Imp ② प्रस्तावना कौशल ⇒

- ये एक ऐसा कौशल है जिसके द्वारा शिक्षक अपने प्रकरण / विषयवस्तु / पाठ की प्रस्तुति प्रभावी तरिके से करता है।
- इसके द्वारा शिक्षक बालकों के पूर्व अनुभवों का लाभ उठाते हुए नवीन ज्ञान को प्रस्तुत करता है।

③ प्रश्न कौशल ⇒

- प्रश्नो का क्रम - वस्तुनिष्ठ → अति·लघु· → लघुत्तात्मक → निबंधात्मक

खोजपूर्ण प्रश्न → नवीन जानकारी प्राप्त करना।
धाराप्रवाहिता प्रश्न → इसमे क्रमबद्धता पर बल दिया जाता है।

④ पुर्नबलन कौशल ⇒

- ये एक बल होता है जो हमारी अनुक्रियाओं की दर को घटाता या बढ़ाता है।
- ये कौशल बालकों को कक्षा में अपेक्षित व्यवहार के लिए तैयार करता है।

⑤ उद्दीपन - परिवर्तन कौशल ⇒

- शिक्षक को कक्षा में अपने हाव-भाव, शारीरिक अंगो का संचालन आवश्यकता के अनुसार करना चाहिए।

⑥ श्यामपट्ट कौशल ⇒

- शिक्षक को श्यामपट्ट के प्रयोग मे दक्ष होना आवश्यक है।
- लेखन के समय 90 डिग्री कोण का होना आवश्यक है।

Scanned with CamScanner

ॐ शिक्षण कौशलों का विकास ↴

★ सूक्ष्म शिक्षण → अवधारणा देने वाले - कीथ एचिसन (1961)
व्यावहारिक रूप देने वाले - ड्वेट ऐलन (1963)
सूक्ष्म शिक्षण का समय - 36 मिनट

ॐ विशिष्ट कौशल ⇒

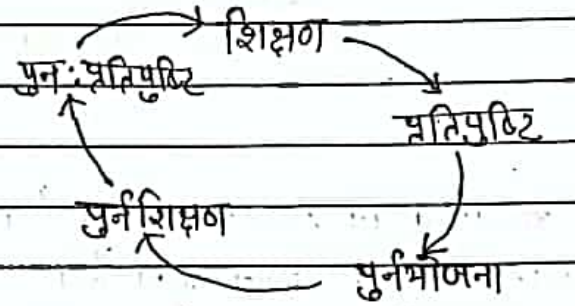

(i) श्रवण कौशल ↴
- भाषा शिक्षण का प्रथम कौशल माना जाता है।
- इस कौशल के विकास के लिए सस्वर वाचन का प्रयोग करना।
- कहानियों, वार्ताओं का प्रयोग करना।

(ii) बोलना ↴
- भाषायी प्रतीकों को जब ध्वनीपूर्ण रूप में मुख द्वारा व्यक्त करना।
- उच्चारण स्पष्ट, प्रभावी, धारा प्रवाह, लयबद्ध, त्रुटिविहीन होना चाहिए।
- भाषायी दक्षता व सम्प्रेषण के लिए इस कौशल का विकसित होना बहुत आवश्यक है।

(iii) वाचन / पढ़ना ↴
- मुद्रित व लिखित सामग्री का उच्चारण करना
- वाचन के प्रकार ↴
① सस्वर वाचन ② मौन वाचन

- आदर्श वाचन मे प्रभावी, शापष्ट, धाराप्रवाही होना जरूरी है।
- वाचन का उच्चारण शुद्ध होना चाहिए।

✡ सस्वर वाचन - इस वाचन मे ध्वनि का उत्पन्न होना आवश्यक है। इसमे नेत्र, जिह्वा व बुद्धि का प्रयोग होता है।
- सस्वर वाचन के प्रकार →
① आदर्श वाचन
② अनुकरण वाचन → (i) व्यक्तिगत
(ii) सामूहिक

(A). आदर्श वाचन - से सस्वर वाचन का प्रारम्भ होता है।
- सस्वर वाचन का प्रथम वाचन है।
- यह वाचन शिक्षक द्वारा किया जाता है।

(B) अनुकरण वाचन - यह वाचन बालकों के द्वारा होता है।
- इसका प्रारम्भ कक्षा के श्रेष्ठ बालक से करवाया जाता है।
- आत्मविश्वास बढ़ाने के लिए सामूहिक वाचन का प्रयोग किया जाता है।

- अनुकरण के पश्चात् बच्चों द्वारा की गयी गलतियों का शिक्षक द्वारा संशोधन किया जाता है।
- वाचन के समय बालकों की समस्याओं के निवारण के निम्न कार्य आवश्यक →
① आवृत्ति, पुनरावृत्ति
② स्थान परिवर्तन
③ चिकित्सा प्रयास

- वाचन के समय पुस्तक बाँयें हाथ मे हो जो हथेली पर 90° का कोण बनाए।
- वाचने " " की दूरी आँखो से 1 फुट दूर होनी चाहिए।
- " " " अनावश्यक शारीरिक अंगो का संचालन ना हो।
- " " " दृष्टि केन्द्र, परिधि, विराम निश्चित होना चाहिए।

Scanned with CamScanner

③ लेखन के प्रकार ⤵

① श्रुतलेख - यह लेखन किसी शब्द, वाक्य को सुनकर किया जाता है।

② सुलेख - यह लेखन किसी लिखित रचना का अनुकरण करके किया जाता है।

- श्रुतलेखन एक मूल्यांकन की प्रक्रिया है; इसमें निदान पर बल दिया जाता है।
- श्रुतलेखन प्राथमिक स्तर पर कुल शिक्षण समय का 10-15% कराना चाहिए।
- श्रुतलेखन उच्च प्राथमिक स्तर पर कुल शिक्षण समय का 3-5% होना चाहिए।
- उच्च प्राथमिक स्तर पर बालकों का पाठ पठित होना जरूरी नहीं है।

* लेखन के समय लेखन माध्यम व आंखों के मध्य 1 फुट से अधिक दूरी हो।
* लेखन के समय 60° का कोण होना चाहिए।

* लेखन की विधियां ⤵

① सार्थक रेखा ⇒ बालक को सीधी व स्पष्ट रेखाएं खींचने का अभ्यास करवाना।
② खण्डशः लेखन ⇒ बच्चों को वर्णों से लेखन का अभ्यास कराना प्रभावी होता है।
③ रेखा अनुसरण ⇒ रेखा/संकेत के माध्यम से वर्णों/शब्दों का अनुकरण बच्चों द्वारा।
④ अनुलेखन ⇒ शिक्षक द्वारा कॉपी में लिखे गये शब्दों को बालक द्वारा अनुकरण।
⑤ स्वतंत्र लेखन ⇒ बालक बिना किसी सहायता के लेखन का कार्य करता है।
⑥ जैकटॉट विधि
⑦ मोन्टसेरी विधि

- जैकटॉट विधि में बालक पूर्व में लिखित शब्दों/वाक्यों को बिना देखे लिखता है, फिर उसी लिखे हुए को मूल विषय-वस्तु के साथ मिलान करता है।
- मोन्टेसरी विधि में लकड़ी/प्लास्टिक के वर्ण बनाकर उनको बच्चों के सम्मुख प्रस्तुत करते हैं व बालक उन वर्णों पर अंगुलियों द्वारा अभ्यास करता है।

Scanned with CamScanner

(iii) प्रश्नोत्तर विधि → शिक्षक कविता की पंक्तियों या एक भाग से संबंधित प्रश्न बालकों से पूछता है व बालक उत्तर देता है।
- इसमें कविता का प्रस्तुतीकरण प्रश्नोत्तर के माध्यम से होता है।
- इस विधि को खण्डान्वय विधि भी कहते हैं।

Imp. (iv) व्याख्यान विधि → यह प्राचीनतम व अमनोवैज्ञानिक विधि है।

① व्यास विधि →
इस विधि में शिक्षक प्रधान होता है जबकी बालक गौण होता है। शिक्षक कथा-वाचक व बालक केवल श्रोता होता है।

② तुलना विधि →
इस विधि में शिक्षक एक ही विद्वान की समान विषय पर लिखित दो रचनाओं या दो या दो से अधिक विद्वानों की समान विषय की रचनाओं को कक्षा में प्रस्तुत करके उनके मध्य अन्तर बताता है। (माध्यमिक स्तर)

③ समीक्षा विधि →
इस विधि के द्वारा शिक्षक कविता के विभिन्न भागों की समीक्षा करता है जिनके निम्न आधार हैं →
① भाषा ② विषयवस्तु ③ पात्र
④ कालक्रम ⑤ उद्देश्य ⑥ प्रस्तुतिकरण

Scanned with CamScanner

* डॉ॰ स्वीट - व्याकरण भाषाओं, व्यवहारिक विश्लेषण है।

3 विधियां →

1. आगमन विधि → के दो रूप है - ① प्रयोग ② सहयोग

① प्रयोग →
यह आगमन का मूल रूप है जिसमे शिक्षक विभिन्न उदाहरण प्रस्तुत करता है, फिर बालक शिक्षक की सहायता से निरीक्षण, विश्लेषण व नियम की खोज करता है।

② सहयोग विधि →
के माध्यम से व्याकरण को अलग से करवाने की आवश्यकता नहीं होती है, शिक्षण के साथ-2 व्याकरण के नियमों का ज्ञान करवाया जाता है।

2. परम्परागत / निगमन विधि → के दो रूप है - ① सूत्र ② पाठ्यपुस्तक

① सूत्र विधि →
- इस विधि में शिक्षक के द्वारा कक्षा मे सर्वप्रथम नियम / सिद्धांत / सूत्रों का ज्ञान करवाकर उन पर आधारित उदाहरण प्रस्तुत करते है।
- इस विधि का विकास संस्कृत भाषा से हुआ है।

② पाठ्यपुस्तक विधि →
इस विधि मे व्याकरण की पुस्तक के माध्यम से व्याकरण के नियमों / सिद्धांतों को याद करवाया जाता है।

* निगमन विधि उच्च कक्षाओ के लिए प्रमुख्य विधि है।
* सरल व संक्षिप्त तथा आगमन की तुलना मे अधिक ज्ञान प्रदान करती है।
* नियमो व सिद्धांतों का ज्ञान कराने की दृष्टि से सरल विधि है।
* बालकों मे स्वअध्ययन की क्षमता का विकास करती है।
* सृजनात्मक बालकों के लिए उपयोगी नही है।

Scanned with CamScanner

यंत्र विधि ⇒

- इस विधि में शिक्षण का कार्य विभिन्न उपकरणों के प्रयोग से करते हैं।
- उपकरण → दृश्य, श्रव्य, दृश्य-श्रव्य

- यह मनोवैज्ञानिक विधि है, बालक क्रियाशील व जिज्ञासु रहता है।
- इस विधि से बालक तीव्रता (५०%) से सीखता है।
- बालकों को प्रत्यक्ष रूप से सीखने व समझने के अवसर प्रदान करती है।

* साधनों की अधिक आवश्यकता लेकिन मंहगे होते हैं।

Imp. कहानी विधि ⇒

- यह एक प्राचीन व परम्परागत विधि है।
- यह एक रोचक व जिज्ञासात्मक विधि है।
- प्राथमिक स्तर के बालकों के लिए उपयोगी विधि।
- हिन्दी व सा० अध्ययन शिक्षण की महत्वपूर्ण विधि है।
- कक्षागत वातावरण को प्रभावी बनाती है।

* इस विधि से सभी विषयों का शिक्षण संभव नहीं।
* कहानी विधि के तत्व → ① विषय ② पात्र ③ कथोपकथन
  ④ वातावरण ⑤ उद्देश्य ⑥ भाषा

Scanned with CamScanner

* विषय की सामग्री शुद्ध, प्रमाणिक, रोचक व उद्देश्यपूर्ण होनी चाहिए।

2. बहुमाध्यम उपागम =>

- एक प्रभावी सामग्री / माध्यम के गुण :-
  ① मनोवैज्ञानिक
  ② विषय / बालक से संबंधित
  ③ व्यावहारिक ④ सरल निर्माण हो
  ⑤ प्रदर्शन करना सरल हो।
  ⑥ सरल, शपष्ट, प्रभावी, बोधगम्य हो।

- सामग्री / माध्यमों के महत्व :-
  * बालकों की इन्द्रियां प्रशिक्षित होती है।
  * शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया प्रभावी होती है।
  * कक्षा का वातावरण जीवंत होता है।
  * बालक क्रियाशील रहता व अर्जित ज्ञानस्थायी होता।
  * मन्द बुद्धि बच्चों के लिए अधिक उपयोगी होते है।

3 लुम्सडेन ने शिक्षण तकनीक के तीन रूप बताए :-
  ① कठोर उपागम
  ② मृदु उपागम
  ③ प्रणाली विश्लेषण

Scanned with CamScanner

3. डाल्टन विधि →
प्रतिपादक - हेलेना पार्कहर्स्ट (1913 ई०)

- अन्य नाम → ठेका प्रणाली, एसाइनमेंट
- इस विधि में कक्षागत क्रियाओं के स्थान पर व्यक्तिक प्रयोगशालाओं को अधिक महत्व दिया जाता है।
- शिक्षक की भूमिका परामर्शदाता की होती है।
- बालक केन्द्रित विधि है। 8 वर्ष से अधिक आयु वाले बच्चो के लिए उपयोगी।
- यह विधि स्वाध्याय पर बल देती है।

उपलब्धि परिक्षण →

- एक बालक विद्यालय में शैक्षिक उद्देश्यों को जिस स्तर तक पूर्ण करता है या बालक के व्यवहार में जो परिवर्तन होते हैं इसकी जांच के लिए जो परिक्षा आयोजित होती है उपलब्धि परिक्षण कहलाता है।

* उपलब्धि परिक्षणों के द्वारा सामूहिक कौशलों की जांच होती है - फ्रीमेन
* उपलब्धि परिक्षण द्वारा बालकों के ज्ञान के स्तर की जांच होती है - गैरीसन

सोपान →
① समस्या का चयन ② लक्ष्यों का निर्धारण ③ सम्पूर्ण पाठ्यक्रम निर्धारण
④ प्रश्नों का निर्माण ⑤ अवधि का निर्धारण ⑥ ब्लू-प्रिंट का निर्माण
⑦ प्रश्नो को व्यवस्थित करना ⑧ प्रश्नो का लेखन ⑨ अंकतालिका निर्माण

प्रकार →
① मनोवैज्ञानिको द्वारा निर्मित - (प्रमापीकृत) - इनका निर्माण आधुनिक विधियों द्वारा व आदर्श मूल्यांकन की विशेषता होती है।
② शिक्षकों द्वारा निर्मित - (अप्रमापीकृत) के तीन प्रकार हैं →
(i) वस्तुनिष्ठ (ii) निबंधात्मक (iii) निदानात्मक

Scanned with CamScanner

Q. एक से अधिक भाषाओं का प्रयोग ?
उ संज्ञानात्मक विकास में सहायक

Q. हिन्दी भाषा का मूल्यांकन करते समय आप सबसे ज्यादा किसे महत्व देंगे ?
उ सीखने की क्षमता का आकलन

Q. लिखना एक -
उ मानसिक प्रक्रिया है ।

Q. भाषा अर्जन में महत्वपूर्ण है ?
उ भाषा के विभिन्न रूपों का प्रयोग ।

Q. भाषा शिक्षण में पाठ्यपुस्तक -
उ साधन है ।

Q. भाषा सीखने - सिखाने में आप किसे सबसे अधिक महत्वपूर्ण मानते हैं -
उ सामाजिक अन्तः क्रिया

Q. भाषा का अतिमहत्वपूर्ण प्रकार्य है - ?
उ सम्प्रेषण

Q. भाषा व विचार के सबन्धों की चर्चा में अग्रणी है ?
उ चॉमस्की

Q. भाषा का आरम्भ किससे होता है ?
उ ध्वनि

Q. पढ़ने का अर्थ है ?
उ वाक्यों को पढ़ना

Scanned with CamScanner

Q. भाषा के कारण ही मनुष्य है, भाषा के आविष्कार के लिए उसका पहले से ही मनुष्य होना आवश्यक है, कथन है -
उ. वॉन अम्बोल्ट

Q. ध्वन्यात्मक शब्दों द्वारा विचारों का प्रकटीकरण ही भाषा है - कथन है -
उ स्वीट

Q. सूक्ष्म शिक्षण चक्र की अवधि होती है ?
उ 36 मिनट

Q. सूक्ष्म शिक्षण में शिक्षण की अवधि होती है ?
उ 12 मिनट

Q. दो बालकों की मानसिक क्षमताएं कभी समान नहीं होती, कथन है -
उ हरलॉक

Q. पाठ मे दिए गए चित्रों का क्या उद्देश्य होता है ?
उ अमूर्त संकल्पना को समझने मे सहायक ।

Q. भाषा के अभिव्यक्तात्मक कौशल है ?
उ बोलना, लिखना

Q. उपचारात्मक शिक्षण की सफलता निर्भर करती है ?
उ समस्याओं के कारणों की सही पहचान पर

Q. बोलना कौशल मे महत्वपूर्ण है ?
उ स्पष्ट व शुद्ध उच्चारण

Q. भाषा - ?
उ एक नियमबद्ध व्यवस्था है ।

Scanned with CamScanner